ॐ

# श्री शारदा सहस्रनामावली
# हवन तथा अर्चना
# के लिए

प्रकाशक :-

स्वामी- गोविन्दानन्द

Kalusa (Bandipore)

मूल्य :- एक रुपया

वेली प्रेस श्रीनगर

# ॐ अथ श्री शारदा सहस्रनामावली

( हवन तथा अर्चना के लिए )

१. ॐ ह्रीं क्लीं शारदायै नमः
शाँतायै
श्रीमत्यै
श्री शुभंकर्यै
शुभाशांताशरद्वीजायै
श्यामिकायै
श्यामकुन्तलायै
शोभावत्यै
शशांकेश्यै
शातकौम्भप्रकाशिन्यै
प्रताप्यायै
तापिनी ताप्यायै
शीतलायै
शेषशायिन्यै
श्यामाशान्तिकर्यै
शांत्यै
श्रीकर्यै
वीरसूदिन्यै
वेश्यायै
वेश्यकरियै
वैश्यायै
वानरियै
वेशमानिलायै
वाचाल्यै
शुभगायै
शोभ्यायै
शोभमानायै
शुचिस्मितायै
जगन्मात्रे
जगद्धात्र्यै
जगत्पालनकारिण्यै
हारिण्यै
गदिन्यै
गोधायै
गोमत्ये
जगदाश्रयायै
सौम्यायै
याम्यायै
काम्यायै
वाम्यायै
वाचामगोचरायै
ऐन्द्रयै
ऐन्द्रीकलायै
कान्तायै
शशिमण्डलमध्यगायै
आग्नेयै
वारुण्यै
वाण्यै
करुणायै
५० ॐ करुणाश्रयायै नमः

५१ ॐ नैर्ऋत्यै नमः
नृतरूपायै
वायव्यै
वाग्भवोद्भवायै
कौवीर्यै
कूवरीकेलायै
कामेश्यै
कामसुन्दर्यै
ऐशान्यै
कोशिन्यै
कारामोचिन्यै
धेनुकामदायै
कामधेन्वे
कलालेश्यै
कपालकरसंयुतायै
चामुण्डायै
मूल्यदायै
मूर्तिमुण्डमालाविभूषणायै
सुमेरुतनयायै
वंध्यायै
चण्डिकायै
चण्डसूदिन्यै
चण्डांशुतेजसीमूर्त्यै
चण्डेश्यै
चण्डविक्रमायै
चाटुकायै
चाटुक्यै
चर्च्यायै
चारुहंसाचमत्कृत्यै
ललज्जिह्वायै
सरोजाक्ष्यै
मुण्डस्रग्मुण्डधारिण्यै
सर्वानन्दमयायै
स्तुत्यायै
सकलानन्दवर्धिन्यै
धृत्यै
कृत्यै
स्थित्यै
शांतिसुवासायै
चारुहासिन्यै
रुक्मांगदायै
रुकमवर्णायै
रुक्मिण्यै
रुक्मभूशितायै
कामदायै
मोक्षदायै
आनन्ददायै
नारसिंह्यै
नृपात्मजायै
१०० ॐ नारायण्यै नमः

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवै सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा

१०१ ॐ नरोत्तुंगायै नमः
नागिनीनगनन्दिन्यै
नागश्रियै
गिरिजायै
गुह्यागुह्यकेश्यै
गरीयसीगुणाश्रयायै
गुणातीतायै
गजराजोपरिस्थितायै
गजाकारायै
गणेशान्यै
गणगन्धर्वसेवितायै
दीर्घकेश्यै
सुकेशायै
पिंगलायै
पिंगलालकायै
भवदायै
भवभव्यायै
भवान्यै
भवतोषितायै
भवालस्यायै
भद्रधात्र्यै
भीरुण्डायै
भगमालिन्यै
पौरन्दरियै
परंख्यात्यै

पुरन्दरसमर्चितायै
पिनाककीर्तिकृत्कीर्त्यै
केयूराढ्यामहाकच्चायै
घोररूपायै
महेशान्यै
कोमलायै
कोमलालकायै
कल्याणकामनायै
कुन्ताकनकांगदभूषितायै
कीनाशवरदाकाल्यै
महामेधायै
महोत्सवायै
विरूपायै
विश्वरूपायै
विश्वधात्र्यै
पिलंपिलायै
पद्मावत्यै
महापुण्यायै
पुण्यापुण्यजनेश्वर्यै
जह्नुकन्यायै
मनोज्ञायै
मानसीमनुपूजितायै
कामरूपायै
कामकलायै
१५० ॐ कमनीयाकलावत्यै नमः

१५१ ॐ वैकुण्ठपत्नीकमलायै नमः
शिवपत्नीपार्वत्यै
काश्यपीगारुडीविद्यायै
विश्वसूर्वीरसूद्युत्यै
माहेश्वर्यै
वैष्णव्यै
ब्रह्म्यै
ब्राह्मणपूजितायै
मान्यामानवत्यै
धन्याधनदायै
धनदेश्वर्यै
अपर्णाशिथिलायै
पर्णायै
पर्णशालायै
परंपरायै
पद्माक्ष्यै
नीलवस्त्रायै
निम्नानीलपताकिन्यै
दयावत्यै
हयाधीरायै
धैर्यभूषणभूषितायै
कुलेऽथमल्लहंत्र्यै
वलहस्तायै
मलापहायै
कौभुद्यै
कौमार्यै
कुमार्यै
कुमुदाकर्यै
पद्मिन्यै
पद्मनयनायै
कुलजायै
कुलकौलिन्यै
करालायै
विकरालाक्ष्यै
विस्रम्भायै
दुर्दुराकृत्यै
वनदुर्गायै
सदाचारायै
सदाशान्तायै
सदाशिवायै
सृष्ट्यै
सृष्टिकर्यै
साध्व्यै
मानुष्यै
देवक्यै
द्युत्यै
वसुदायै
वासव्यै
वेण्वै
२०० ॐ वाराह्यै नमः

विश्वव्यापिनियद्वदीश्वर इति स्थानावनन्याश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननी त्वय्येवतथ्यस्थिति
इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमाः क्षुद्रारुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानऽपि न क्षिणोषि च रुषातद्देवि ! चित्रं महत्

२०१ ॐ अपराजितायै नमः
रोहिणीरमणायै
रामायै
मोहिन्यै
मधुराकृत्यै
शिवशक्त्यै
महाशक्त्यै
शांकर्यै
टंकधारिण्यै
शंकवंकमालढयायै
लंकायै
कंकनभूषितायै
दैत्यपाशहरायै
दीप्त्यै
दामोज्जवकुचारुणायै
क्षांत्यै
क्षेमंकर्यै
बुद्ध्यै
बोद्धाचारपरायणायै
श्रीविद्यायै
भैरवीविद्यायै
भारत्यै
भयगातिन्यै
भीमायै
भीमरवायै
भैमीभंगुरायै
क्षणभंगुरायै
जित्यायै
पिनाकभूःसैन्यायै
शंखिन्यै
शंखरूपिण्यै
देवांगनायै
दैवमान्यायै
दैत्यभूर्दैत्यसूदिन्यै
देवकन्यायै
पौलोमीरतिःसुन्दरदोस्तटच्यै
सखिनीशाकिनीशाक्यै
सर्वसौख्यविवर्धिन्यै
लोलालीलावतीसूक्ष्मायै
स्थूलसूक्ष्मगर्तिमत्यै
वरेण्यायै
वरदावेणीशरण्यायै
शरचापिनीउग्रकाल्यै
महाकालीमहाकालसमर्चितायै
ज्ञानदायै
योगिध्येयायै
गोवल्लीयोगवर्धिन्यै
पेशलामधुरामायायै
विष्णुमायायै
महोज्जवलायै
२५० ॐ वाराणस्यै नमः

२५१ ॐ अवन्त्यै नमः
कांचीकुरुक्षेत्रभुवे
अयोध्यायै
योगसूर्यायै
यादवेश्यै
यदुप्रियायै
यमहर्त्र्यै
यमदायामिनीयोवत्तरुवे
भस्मोज्ज्वलायै
भस्मशय्यायै
भस्मकालीचितार्चितायै
चन्द्रिकायै
छलिनीशिल्पायै
आसिनीचन्द्रवासितायै
पद्महस्तायै
पीतायै
पाशिनीपाशमोचिन्यै
सुधाकलशहस्तायै
सुधामूर्त्यै
स्वधामय्यै
व्यूहायुधायै
वरारोहायै
वरदात्र्यै
वरोत्तमायै
मांसाशनायै
महाधूर्तमोहदायै
मधूरारम्भायै
मधुपायै
माधवीमाल्यामल्लिकायै
कालिकामृग्यै
मृगाक्ष्यै
मृराजस्थायै
केश कीनाशघातिन्यै
रक्ताम्बरधरायै
रात्रिः सुकेशीसुरनायिकायै
सौरभ्यै
सुरभ्यै
स्वक्षीस्वयंभूकुसुमार्चितायै
अम्बायै
जृम्भायै
जटाभूषायै
जटिन्यै
जूटिन्यै
नटचै
परमानन्द जायै
ज्येष्ठायै
श्रेष्ठायै
कामेष्ठवर्धिन्यै
रौद्रचै
३०० ॐ रुद्रस्तनारुद्धायै नमः

मोहान्धकारभरिते हृदये मदीये
मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे
स्वीयाखिलावयवनिर्मलसुप्रभाभिः
शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम्

३०१ ॐ शतरुद्रायै नमः
शाम्भव्यै
श्रविष्ठायै
शितिकंठेश्यै
विमलानन्दवर्धिन्यै
कपर्दिन्यै
कल्पलतायै
महाप्रलयकारिण्यै
महाकल्पान्तसहृष्टायै
महाकल्पक्षयंकर्यै
संवर्ताग्निप्रभायै
सेव्यायै
सानन्दायै
आनन्दवर्धिन्यै
सुरसेनावसारेश्यै
सुराक्ष्यै
वरोत्सुकायै
प्राणीश्वर्यै
पवित्रायै
पावन्यै
लोकपावन्यै
लोकधात्र्यै
महाशुक्लायै
शिशिराचलकनिकायै
तमोघ्न्यै
ध्वांतसंहर्त्र्यै
यशोदायै
यशस्विन्यै
प्रद्योतिन्यै
द्युमत्यै
धीमत्यै
लोकचर्चितायै
प्रणवेश्यै
परागत्यै
पारावारसुतायै
समायै
डाकिन्यै
शाकिन्यै
द्रव्धायै
नीलनागांगनायै
द्युतये
कुंदद्युतये
कुरटायै
कान्तिदायै
भ्रान्तिदायै
भ्रमायै
चर्चितायै
अर्चर्चितगोष्ठ्यै
गजाननसमर्चितायै
३५० ॐ खगेश्वर्यै नमः

३५१ ॐ खनीलायै नमः
नादिन्यै
खगवाहिन्यै
चन्द्राननायै
महारण्मायै
महोग्रानीनकन्यकायै
मानप्रदायै
महोरूपायै
महामहेश्वरार्पितायै
मरुद्गणायै
महावक्त्रायै
महोंरगभयानकायै
महाघोणायै
करेशान्यै
मार्जार्यै
मन्मथोज्ज्वलायै
कर्त्र्यै
हर्त्र्यै
पालयित्र्यै
चण्डमुण्डनिसूदिन्यै
निर्मलायै
भास्वत्यै
भीमायै
भाद्रिकायै
भीमविक्रमायै
गंगायै
चन्द्रावत्यै
दिव्यायै
गोमत्यै
यमुनानद्यै
विपाशायै
सरय्वै
ताप्त्यै
वितस्ताकुंकुमाचितायै
गंडक्यै
नर्मदायै
गौर्यै
चन्द्रभागायै
सरस्वत्यै
ऐरावत्यै
कावेर्यै
शतह्लासायै
शतह्लदायै
श्वेतवाहनसेव्यायै
श्वेतास्यायै
स्मितभाषिण्यै
कौशांभ्यै
कोशदायै
कोश्यायै
४०० ॐ काश्मीरीकनकेलिन्यै नमः

ध्यातऽसि हैमवति ! येन हिमांशुरश्मि
मालाऽमलद्युतिरऽकलमष मानसेन
तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमऽनल्प कल्प-
मल्पैर्दिनैः सृजासि सुन्दरि ! वाग्विलासम्

४०१ ॐ कोमलायै नमः
विदेहायै
पूःपुर्यै
पुरसूदिन्यै
पौरोरवायै
पलायै
पाल्यै
पीवरांग्यै
गुरुप्रियायै
पुरारिगृहिण्यै
पूर्णायै
पूर्णरूपायै
रजस्वलायै
सम्पूर्णचन्द्रवदनायै
बालचन्द्रसमद्युतये
रेवत्यै
प्रेयस्यै
रेवायै
चित्रायै
चित्राम्वरायै
नवपुष्पसमुद्भूतायै
नवपुष्पैकहारिण्यै
नवपुष्पसमासीनायै
नवतुष्पकुलावनायै
नवपुष्पोद्भवाप्रेतायै
नवपुष्पसमाश्रयायै
नवतुष्पललत्केशायै
नवपुष्पललन्मुखायै
नवपुष्पललत्कर्णायै
नवपुष्पललच्छव्यै
नवपुष्पललन्नेत्रायै
नवपुष्पललन्नसायै
नवपुष्पसमाकारायै
नवपुष्पललद्भूजायै
नवपुष्पललत्कंठायै
नवपुष्पचितस्तन्यै
नवपुष्पललन्मध्यायै
नवपुष्पकुलालकायै
नवपुष्पललन्नाभ्यै
नदपुष्पललद्भूगायै
नवपुष्पललत्पादायै
नवपुष्पकुलांगिन्यै
नवपुष्पगुणोत्पीडायै
नवतुष्पोपशोभितायै
नवपुष्पप्रियाप्रेतायै
प्रेतमण्डलमध्यगायै
प्रेतासनायै
प्रेतगत्यै
प्रेतकुण्डलभूषितायै
४५० ॐ प्रेतवाहुकरायै नमः

४५१ ॐ प्रेतशय्याशयनशायिन्यै
कुलाचारायै
कुलेशान्यै
कुलकायै
कुलकौलिन्यै
श्मशानभैरव्यै
कालभैरव्यै
शिवभैरव्यै
स्वयंभूभैरव्यै
विष्णुभैरव्यै
पुरभैरव्यै
कुमारभैरव्यै
बालभैरव्यै
रुद्रभैरव्यै
शशांकभैरव्यै
सूर्यभैरव्यै
वह्निभैरव्यै
शोभादिभैरव्यै
मायाभैरव्यै
लोकभैरव्यै
महोग्रभैरव्यै
साधुभैरव्यै
मृत भैरव्यै
सम्मोह भैरव्यै
शब्द भैरव्यै

रस भैरव्यै
समस्त भैरव्यै
देवभैरव्यै
मन्त्र भैरव्यै
सुन्दरांगीमनोहर्त्र्यै
महाश्मशानसुन्दर्यै
सुरेशसुन्दर्यै
देवसुन्दर्यै
लोकसुन्दर्यै
त्रैलोक्यसुन्दर्यै
ब्रह्मसुन्दर्यै
विष्णुसुन्दर्यै
गिरीशसुन्दर्यै
कामसुन्दर्यै
गुणसुन्दर्यै
आनन्दसुन्दर्यै
वक्त्र सुन्दर्यै
चन्द्रसुन्दर्यै
आदित्य सुन्दर्यै
वीरसुन्दर्यै
वह्निसुन्दर्यै
पद्माक्षसुन्दर्यै
पद्मसुन्दर्यै
पुष्पसुन्दर्यै
५०० ॐ गुणदासुन्दर्यै नमः

रूपं तव स्फुरितचन्द्रमरीचिगौर-
माऽलोकते शिरसि वागधिदैवतं यः
निः सीमसूक्तिरचनामृतनिर्भररस्य
तस्या प्रसादमधुराः प्रसरन्ति वाचः

५०१ ॐ देवीसुन्दर्यै
परसुन्दर्यै
महेशसुन्दरी देव्यै
सहात्रिपुरसुन्दर्यै
स्वयंभूसुन्दरी देव्यै
स्वयंभूपुष्पसुन्दयै
शुक्रैकसुन्दर्यै
लिंग सुन्दर्यै
भग सुन्दर्यै
विश्वेन्द्रसुन्दर्यै
विद्यासुन्दर्यै
काल सुन्दर्यै
शुक्रेश्वर्यै
महाशुकायै
शुक्रतर्पण तर्पायै
शुकोद्भवायै
शुक्ररसायै
शुकपूजनतोषितायै
शुक्रात्मिकायै
शुक्रकरियै
शुक्रस्नेहायै
शुक्रिण्यै
शुक्रसेव्यायै
सुराशुक्रायै
शुक्रलिप्तमनोन्मनायै
शुक्रहारायै
सदाशुक्रायै
शुक्ररूपायै
शुक्रजायै
शुक्रसू: शुक्ररम्यांग्य
शुकाशुकविवर्धिन्यै
शुकोत्तमाशुकपूजाय
शुकेश्यै
शुकवल्लभायै
शुकप्रियायै
शुकरतायै
शुकभंजनतत्परायै
ज्ञानेश्वर्यै
भगोन्तुंगायै
भगमालाविहारिण्यै
भगलिंगैकरसिकालिंगिन्यै
भगमालिन्यै
वेंदवेशीभगाकागायै
भगलिगादिशुकमुख्यै
वात्यालयै
विनतायै
आद्यारूपिण्यै
मेघमालिन्यै
गुणाश्रयागुणवत्यै
५५० ॐ गुणगौरवसुन्दर्यै नम:

५५१ ॐ पुष्पतारयै नमः
महापुष्ट्यै
पुष्टिःपरमलध्वजायै
स्वयंभूपुष्पसंकाशायै
स्वयंभूपुष्पपूजितायै
स्वयंभूपुष्पन्यासायै
स्वयंभूकुसुमार्चितायै
अपानप्राणरूपायै
व्यानोदानस्वरूपिण्यै
प्राणदायै
मादिरामोदायै
मधुमत्यै
मदोदितायै
नारीपुष्पसमप्राणायै
नारीपुष्पसमुत्सुकायै
नारीपुष्पलतायै
नार्यै
नारीपुष्पसृजार्चितायै
षड्गुणायै
षडगुणातीतायै
षौडश्यै
शश्निः कलायै
चतुर्भुजायै
दशभुजायै
अष्टादशभुजायै
द्विभुजायै
षट्कोणायै
त्रिकोणायै
निलयाश्रयायै
स्रोतवत्यै
महादेव्यै
महारौद्रयै
दुरंतकायै
दीर्घनासायै
सुनासायै
दीर्घजिह्वायै
मौलिन्यै
सर्वाश्रयायै
सर्वगुणायै
सर्वस्थायै
सर्वतोमुखायै
सर्वाधारायै नमःt
सर्वमय्यै
सारस्यै
सरलाश्रयायै
सहस्रनयनप्राणायै
सहस्राक्षसमर्चितायै
सहस्रशीर्षायै
सुभटायै
६०० ॐ शुभेच्छायै नमः

आधारमारुतनिरोधवशेन येषां
सिन्दूर रंजित सरोज गुणानुकारी
तीव्रं हृदि स्फुरति देवि ! वपुस्त्वदीयं
ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्धसाध्या

६०१ ॐ दक्षपुत्रिण्यै नमः
सृष्टिकायै
सृष्टिचक्रस्थायै
षडवर्गफलदायिन्यै
अदितिर्दितिरात्मश्रीराद्यायै
आज्ञाभचक्रिण्यै
भरणीभगबिम्वाक्ष्यै
कृतिकाचेक्षुमादितायै
इन्दुश्रीरोहिण्यै
चेष्टिचेष्टामृगशिरोधरायै
ईश्वर्यै
वाग्भव्यै
चांद्रयै
मालिनीमुनिसेवितायै
उमायै
पुर्नजयायै
जारायै
ऊष्मारुधापुनर्वसवे
ऋतुस्तिष्यायै
तिमिस्तांतीजाङ्गिनीलिप्तदेहिन्यै
लीढायै
श्लेषतारायै
शिलिष्टायै
भधवार्चितापादुक्यै
मघायै

मोघायै
एणाक्ष्यै
ऐश्वर्यपददायिन्यै
ऐंकार्यै
चन्द्रमुकुटायै
पूर्वफाल्गुणकीश्वर्यै
उत्तरफाल्गुणहस्तायै
हस्तिसेव्यायै
समेक्षणायै
ओजस्विन्यै
उत्साह्यायै
चित्रिण्यै
चित्रभूषणायै
अंभोजनयनायै
स्वातिविशाखाजननीशिखायै
अः कारनिलयाधारायै
अनूरुसव्यायै
जेष्ठज्ञायै
मूलापूर्वादिशाढेश्यै
उत्तराषाढ्चानन्यै
श्रवणायै
धर्मिणीधर्म्यायै
धनिष्टायै
शतभिषजे
६५० ॐ पूर्वभद्रपदस्थानायै नमः

६५१ ॐ उत्तराभद्रपालिन्यै नमः
रेवतीरमणास्तुत्यायै
नक्षत्रेशसमर्चितायै
कंदर्पदर्पिण्यै
दुर्गायै
कुरुकुलकपोलिन्यै
केतकीकुसुमस्निधायै
केतकीकृतभूषणायै
कालिकायै
कालरात्रिकुटुम्बजनतर्पितायै
कंजपत्राक्षिण्यै
कल्परूपिण्यै
कालपोषितायै
कर्पूरपूर्णवदनायै
कचभारनताननायै
कलानाथकोलमौलिःकलायै
कलिमलापहायै
कादिम्बनीकरगत्यै
करिचक्रसमर्चितायै
कुंजेश्वरी कृपारूपायै
करुणामृत वर्षिण्यै
खर्वाखद्योतरूपायै
खटेशी खड्गधारिण्यै
खद्योत चंचलायै
खेश्यै
खेचरीखेचरार्चितायै
गदधरीशयायै
गुर्व्यै
गुरुपुत्र्यै
गुरुप्रियायै
गीतवाद्यप्रियायै
गाथायै
गवक्त्रप्रसवे
गतिगारिष्ठागणपूज्यायै
गूढगुल्फायै
गणेश्वर्यै
गणमान्यायै
गणेशान्यै
गाणपत्यफलप्रदायै
घर्मांशुनयनायै
धर्माधारायै
घुर्घुरनादिन्यै
घटस्तन्यै
घटाकारायै
घुसृणाकुलितस्तन्यै
घोरारवाघोरमुख्यै
धोरदैत्यनिवार्हिण्यै
घनछायायै
घनज्योत्यै
७०० ॐ चतुरायै नमः

कल्पोप संहरणकोलिषु पण्डितानि
चण्डानि खण्डपरशोरपि ताराडवानि
आलोकनेन तव कोमलितानि मात-
र्लास्यातमना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै

७०१ ॐ ड व काडे. शतरूपायै नमः
चतुरायै
चतुरातुर्यै
चतुराननसम्पूज्यायै
चतुर्भुजसमर्चितायै
चर्माम्बरायै
चरमगत्यै
चतुर्वेदमय्यै
चलायै
चतुः समुद्रशयनायै
चतुर्दशसुरार्चितायै
चकोरनयनायै
चम्पायै
चम्पकायै
कुलकुंतलायै
च्युताचीराम्बरायै
चारुमूर्त्यै
चम्पकमालिन्यै
छायायै
छद्मकर्यै
छेल्यै
छेटिकायै
छिन्नमस्तिकायै
छिन्नशीर्षायै
छिन्ननासायै
छिन्नवस्त्राविरूथिन्यै
छन्दिछत्रायै
छात्रछात्रिकायै
छात्रमंत्रानुग्राहिण्यै
छन्दिन्यै
छद्मनिरतायै
छद्मसद्मनिवासिन्यै
छायासुतहरायै
हत्यायै
छलरूपसमुज्वलायै
जयायै
विजयायै
जेयायै
जयमण्डलमांडितायै
जयनाथप्रियायै
जप्यायै
जयदायै
जयवर्धिन्यै
ज्वालामुख्यै
महाजवालायै
जगत्त्राणपरायिण्यै
जगद्धात्र्यै
जगद्धर्त्र्यै
जगतामुपकारिण्यै
७५० ॐ जालन्धरियै नमः

७५१ जयंत्यै नमः
जंबारातिवरप्रदायै
झिल्लीझंकारमुखरायै
झरीझर्जरिकायै
जनरूपायै
महाजेश्यै
अब्जहस्ताब्जविलोचनायै
टंकारकारिण्यै
टीकायै
टिकायै
टंकायुधप्रियायै
कुरांगीटलगध्येयायै
ठकारत्रयभूषणायै
डामर्यै
डमरुप्रांतायै
डमरूप्रहितोन्मुख्यै
डिल्ल्यै
ढकारवाचालायै
आढ्यभूषाभूषिताननायै
णां-लाण-वणसंयुक्तायै
णेयाणेयंविनाशिन्यै
तुला-अक्ष्यै
त्रिनयनायै
त्रिनेत्रवरदारिन्यै
तारायै
तारखायै
तुल्यायै
तारावर्णसमन्वितायै
उग्रतारायै
महाघोरातोतुलायै
अतुलविक्रमायै
त्रिपुरायै
त्रिपुरेशान्यै
त्रिपुरांतकरोहिण्यै
तंत्रैकनिलयाश्रयायै
तुषारांशुकलाधर्यै
तापः प्रभावदारूषायै
तपसायै
तापहारिण्यै
तुषारकरपूर्णास्यायै
तुहिनाद्रिसुतातुषायै
तालायुधायै
तार्क्षवेगायै
त्रिकूटायै
त्रिपुरेश्वर्यै
थकाराकारनिलयायै
थाल्लीथल्लीथवर्णजायै
दयात्मिकायै
दीनारवायै
८०० ॐ दुःखदारिद्रयनाशिन्यै नमः

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्ति त्रयं त्रिस्वरा-
स्तैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्म वर्णास्त्रयः
यत्किञ्चज्जगती त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
तत्सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः

८०१ ॐ देवेशदेवजनन्यै नमः
दर्शविद्यायै
दयाश्रयायै
द्युनयै
दैन्यसंहर्त्र्यै
दोर्भाग्यापदानाशिन्यै
दक्षिणाकालिकायै
दक्षायै
दक्षयज्ञविनाशिन्यै
दानवायै
दावेन्द्राण्यै
दान्तायै
दम्भविवर्जितायै
दधीचिवरदायै
दुष्टदैत्यदर्पापहारिण्यै
दीर्घनेत्रायै
दीर्घकचायै
दुष्टारपदसंस्थितायै
धर्मध्वजायै
धर्ममय्यै
धर्मराजवरप्रदायै
धनेश्वर्यै
धनिस्तुत्यधनाध्यक्षायै
धनात्मिकायै
धीर्धनिर्धवलाकारायै
धवलाम्बोजधारिण्यै
धीरसूर्धरिण्यै
धात्र्ये
धूर्धुन्यै
धनिये
नवीनायै
नूतनायै
नव्यानलिनायतलोचनायै
नरनारयणस्तुत्यायै
नागहारविभूषणायै
नवेन्दुसन्निभायै
नम्रायै
नागकेसरमालिन्यै
नृवन्द्यायै
नगरेशानीनायिकानायकेश्वय
निरक्षरायै
निरालम्बायै
निर्लोभायै
निर्योनिजायै
नन्दजायै
अनङ्गायै
दर्पाढ्यातिकंदानरमुंडिन्यै
निद्यानन्दफलायै
नम्यानन्दकर्मपरायिण्यै
८५० ॐ नरनारीगुणप्रीतायै नमः

८५१ ॐ नरमालाविभूषणायै नमः
पुष्पायुधायै
पुष्पमालायै
पुष्पवाणायै
प्रियंवदायै
पुष्पवाणप्रियंकर्यै
पुष्पवाणविभूषितायै
पुण्यदायै
पूर्णिमापूतायै
पुण्यकोटिफलप्रदायै
पुराणागममन्त्राढचायै
पुराणपुरुषाकृत्यै
पुराणगोचरायै
पूर्वायै
परंब्रह्मस्वरूपिण्यै
परापररहस्यात्मायै
प्रह्लाद्यापरमेश्वर्यै
फाल्गुणीफाल्गुणप्रीतायै
फनिराजसमर्चितायै
फणप्रदायै
फणेशीफणाकारायै
फणेत्तमायै
फणिहारायै
फणिगत्यै
फणिकांचीफलाशनायै
वलदायै
बाल्यरूपायै
ब-ला-अक्षरमन्त्रितायै
ब्रह्मज्ञानमयीब्रह्मवांछायै
ब्रह्मपदप्रदायै
ब्रह्माण्यै
बृहंति:क्रीडायै
ब्रह्मावर्तप्रवर्तिन्यै
ब्रह्मरूपपरापूजायै
ब्रह्ममुण्डैकमालिन्यै
बिन्दुभूषायै
विन्दुमात्रायै
बिम्बोष्ठिबगुलामुख्यै
ब्रह्मास्त्रविद्यायै
इन्द्राक्ष्यै
ब्रह्माच्युतनमस्कृतायै
भद्रकाल्यै
सदाभद्रायै
भीमेश्यै
भुवनेश्वर्यै
भैरवाकारकल्लोलाभैरव्यै
भैरवार्चितायै
मानवीभास्वदम्भोजायै
भास्वदास्याभयार्तिहायै
९०० ॐ क्रीडायै नमः

ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः
शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावे ।
न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे,
न स्युः कथञ्चिदपि निजकार्य दक्षाः

९०१ ॐ भागीरथ्य नमः
भद्रायै
स्वभद्रायै
भद्रवर्धिन्यै
महामायायै
महाशांतायै
मातङ्गीमीनतर्प्िताय
मोहकाहारसंस्तुत्यायै
माननीमानवर्धिन्यै
मनोज्ञशकुलीकर्णायै
मायिनीमधुराक्षरायै
मायाबीजवत्यै
मान्यायै
मारीभयनिसूदिन्यै
माधवानन्दायै
माध्वीमदिरारुणलोचनायै
महोत्साहगुणोपेतायै
मर्हषिभिर्माननीयायै
मत्तमातङ्गगायै
मत्तायै
मन्मथारिवरप्रदायै
मयूरकेतुजयिन्यै
मन्त्रराजविभूषितायै
यक्षिण्यै
योगिन्यै
योग्यायै
याज्ञिकीयोगवत्सलायै
यशोवत्यै
यशोधात्र्यै
यज्ञभूतदयापरायै
यमस्वस्रे
यमस्त्रियै
यजमानवरप्रदायै
राज्ञ्यै
रात्रिचरघ्नियै
राक्षसीरसिकारसाय
रजोवत्यै
रतिष्ठात्रीराजमातङ्गिनीपरायै
राजराजेश्वरीराज्ञ्यै
रसास्वादविचक्षणायै
ललनानूतनाकारयै
लक्ष्मीनाथसमर्चितायै
लक्ष्म्यै
सिद्धलक्ष्म्यै
महालक्ष्म्यै
ललद्रसायै
लवङ्गीकुसुमप्रीतायै
लवङ्गफलतोषितायै
लाक्षारुणाललन्यायै
९५० ॐ लांगूलिवरदायिन्यै नमः

९५१ ॐ वातात्मजप्रियायै नमः
वीर्यावरदायै
वानरेश्वर्यै
विज्ञानकारिणीवेणायै
वाग्देवीवरधीरदायै
विद्यावत्यै
वैद्यमात्रे
विद्याहारविभूषणायै
विष्णु वक्षः स्थलस्थायै
वामदेवांगवासिन्यै
वामाचारप्रियायै
वल्लीविवस्वत्सोमदायियेयन
शारदायै
नारदाम्भोजभारिण्यै
शूलधारिण्यै
शशाँकमुकुटाशिष्यायै
शेषशायिनमस्कृतायै
श्यामायै
श्यामम्बरायै
श्याममुखी श्रीपतिसेवितायै
षोडश्यै
षाडसायै
षड्गषडाननप्रियंकय
षडंघ्रिकूजितायै
षष्टिः षोडशस्वरभूषितायै
षोडशाराब्जनिलयायै
षोडषीषोडशाक्षर्यै
सौं बीजमण्डितायै
सर्वासर्वगास्वरूपिण्यै
समस्तनरकत्रात्रे
समस्तदुरितापहायै
सम्पत्करीमहासमपत्सर्वदायै
सर्वतोमुखायै
सूक्ष्माकारायै
सतीसीतायै
समस्तभुवनाश्रयायै
सर्वसंस्कारसम्पत्यै
हरप्रियायै
हरिस्तुत्याहरिवाहाहरेश्वर्यै
हालाप्रियाहलिमुखे
हारकेशीहृदेश्वर्यै
ह्लींबीजवर्णमुकुटायै
हरिहरप्रियकारिण्यै
क्षमा क्षांतायै
क्षोण्यै
क्षेत्रियीमन्त्ररूपिण्यैं
पंचात्मिकापंचवर्णायै
पंचतिग्नांशुभेदिन्यै
मुक्तिदामुनिवर्गेश्यै
१००० ॐ शांडिल्य वरदायिन्यै नमः

१. ॐ ह्रीं ऐं ह्लीं च पंचवर्णा श्री सरस्वती
२. ॐ सौं ह्लीं श्रीं शरद्बीजशीर्षानील सरस्वती
३. ॐ ह्लीं क्लीं सः नमो ह्लीं ह्लीं स्वाहा बीजा
च शारदा

ॐ श्री शारदासहस्रनामावली सम्पूर्णा

श्री शारदापर्णमस्तु

---:o:---

नोट :—

प्रस्तुत नामावली श्री बी. एन. निकू ने एक तन्त्रदीक्षित महात्मा के परामर्श से विशेषण - विशेष श्लेषद्वारा एक सहस्रनाम बनाकर तैय्यार किया है और मुझे इसे छपवाने की अनुमति दी है । यदि शारदा सहस्रनाम के नाम अलग अलग करें तो लगभग ११६७ नाम बनते हैं । परन्तु एक ही नाम की पुनरावृति युक्तियुक्त न होने से सहस्रं का एक सहस्र नाम ही युक्ति संगत है। भवानी सहस्रनाम में ११०० नाम हैं । कई नामों की पुनरावृति है । इसी से प्रेरित होकर कुछ सज्जन प्रस्तुत सहस्रनाम में भी ११०० नाम बनाने की चेष्टा करते हैं पर ध्यान रहे कि इस सहस्रनाम में ११६७ नाम हैं । प्रस्तुत नामावली नामों को पुनरावृतिदोष से मुक्त है ।

इसके अतिरिक्त ऋष्यादिन्यास आदि तथा कुछ परामर्श भी भक्तजनों की सुविधा के लिए इस पावन ग्रन्थ में दिये गये है जो कि वास्तव में तन्त्रदीक्षा के समय गुरुमुख से ही सुने जाते हैं ।

प्रकाशक :- (स्वामी गोविन्दानन्द)

इदं सहस्रं नाम्नां तु शारदायाः स्तवोत्तमम् ।
तद् भक्तैः सर्वलाभाय ससुखं संप्रकाशितम् ॥ (अन्वयः)